ओम् शांति। कितना मीठा गीत है। भल बनाया फिल्म वालों ने है; परन्तु वे तो कुछ भी नहीं जानते। तुम मीठे बच्चे इस बेहद के नाटक में पार्ट बजाए रहे हो। बेहद के ड्रामा में बेहद का बाप भी अब पार्ट बजा रहे हैं। तुम बच्चों को स्वीट बाबा ही नज़र आता है। आत्मा इन नयनों, शरीर के ऑरगंस द्वारा देखती है एक/दो को। आत्मा भी जो सन्मुख बैठी है वह जानती है, जिसके लिए बाप कहते हैं स्वीट चिल्ड्रेन। बाप कहते हैं मैं सब बच्चों को बहुत स्वीट बनाने आया हूँ। माया ने तुमको बहुत कड़वा बनाए दिया है। ये बाप ही आकर समझाते हैं। तुम कितने स्वीट थे, बरोबर तुम जब मंदिरों में जाते हो तो देवताओं को कितना स्वीट समझते हो, देवताओं को कितना मीठी नज़र से देखते हो, कहाँ मंदिर खुले तो स्वीट देवताओं का दर्शन करें। बनावट तो भल पत्थर का है। समझते हैं, वे स्वीट होकर गए हैं। शिव के मंदिर में जाते हैं। वो भी बहुत स्वीटेस्ट है। ज़रूर होकर गया है। स्वीटेस्ट ते स्वीटेस्ट है। ऐसा मीठे ते मीठा बाप ज़रूर भारत में ही आया होगा। मंदिरों में जो भी हैं वो सब होकर गए हैं। ज़रूर कुछ करके गए हैं। बाप बैठ समझाते हैं, कौन क्या–2 करके गए हैं। स्वीटेस्ट बाप को जानने वाले बच्चे ही होंगे। तो ज़रूर कहेंगे, निराकार परमपिता प० सबसे स्वीट है। भारत में खास, दुनिया में आम, शिवबाबा का महिमा तो बहुत है। शिव काशी, शिव काशी कहते हैं। सन्यासी आदि जाए कर वहाँ रहते हैं। शिव काशी विश्वनाथ गंगा, ऐसे बहुत कहते हैं; परन्तु बोलते हैं डेडर मुआफिक। समझते कुछ भी नहीं। ये बाबा सब तरफ चक्कर लगाए आए हैं। शिवबाबा तो जानते ही हैं। शिव की कितनी महिमा करते हैं! अब कोई कह दे शिवोहम् तो बाबा कहेंगे कितना मूर्ख बच्चा है! यूँ जानते हैं ये सब स्वीट चिल्ड्रेन हैं, घर के बच्चे हैं। सबको नम्बरवार अपना पार्ट मिला हुआ है। नाटक में कोई–2 को हीरो–हीरोइन का पार्ट मिलता है, कोई को क्या पार्ट मिलता है। सबकी नज़र हीरो–हीरोइन पर ही जावेगी। अब इस ड्रामा में जो हीरो–हीरोइन है, उन्हों के लिए ही गाते हैं तुम मात–पिता.....। अभी तुम बच्चे जानते हो, उस मात–पिता के सन्मुख हम बैठे हैं। दुनिया के सन्मुख तो नहीं है। ये है गुप्त। उनका नाम–निशान बिल्कुल ही गुम कर दिया है। सिर्फ चित्र है; परन्तु उनसे कोई पता नहीं पड़ता। शिव के पुजारी तो बहुत होते हैं। भक्त लोग कहते हैं, कानों में ऐसा करो तो शिव का घुन्ड सुनेंगे। बाबा ने ऐसे बहुत देखे हैं। शिवबाबा है स्वीटेस्ट। उन जैसा स्वीट कोई हो नहीं सकता। वो स्वीटेस्ट न आए तो ये पतित दुनिया से पावन कैसे हो? इस समय तुम बच्चों के सिवाय कोई भी स्वीट न है। भल देखने में अच्छे–2 हैं, सूरत भल मनुष्य जैसी है; परन्तु सीरत शैतान की है; परन्तु ऐसे कोई अपन को शैतान समझते थोड़े ही हैं। अपन को शिवोहम्, भगवान कहते रहते। अरे, भगवान इतना स्वीटेस्ट, वो तो परमधाम में रहने वाला है, तुम फिर इस पतित दुनिया में कैसे कहते हो– शिवोहम्, हम भगवान हैं। भगवान तो रचयिता पतित–पावन है। भगवान को सभी भक्त याद करते हैं। ऐसे नहीं, सब भक्त भगवान हैं। अपन को भगवान कहने वालों को ही हिरण्यकश्यप, अकासुर–बकासुर कहा गया है। भागवत में लगा हुआ है। भागवत का संबंध है गीता से, महाभारत से; परन्तु बातें उल्टी कर दी हैं। भारत का मुख्य शास्त्र एक ही गीता है। क्राइस्ट का बाईबल एक है, कुरान एक है। तुम्हारा भी शास्त्र एक होना चाहिए। गाया भी जाता है सर्वशास्त्रमई शिरोमणि गीता। श्रीमत भगवान तो फिर भी श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ हुआ ना। बाकी सब वेद–शास्त्र आदि गीता के पत्ते अथवा बच्चे हैं। श्रीमत भगवत गीता है। गीता है माँ। माँ का पति कौन? भगवान। तो बाप के बदले नाम बच्चे का लिख दिया है। कृष्ण को स्वीटेस्ट नहीं कहेंगे, निराकार शिव को ही स्वीटेस्ट कहेंगे। स्वीटेस्ट बाबा द्वारा ही स्वीटेस्ट स्वर्ग में जावेंगे। ये डिनायस्टी रची जा रही है। स्वीटेस्ट बाबा हमको मोस्ट बिलवेड, स्वीट बना रहे हैं। जो जैसा होगा ऐसा बनावेगा ना। कहते हैं, मैं निराकार हूँ, तुम आत्माएँ भी निराकार हो। शिव के मंदिर में शिवलिंग की पूजा होती है ना! यज्ञ रचते हैं तो सालिग्राम और शिव का बनाते हैं, उनकी पूजा करते हैं। बहुत बड़े–2 सेठ लोग यज्ञ रचते हैं। रुद्र शिव का भी बनाते हैं और सालिग्राम भी बनाते हैं। ब्राह्मण लोग पूजा करते हैं। तुम ब्राह्मण ही पूज्य थे, फिर पुजारी बने हो।

शिव का लिंग बड़ा–छोटा बनाए पूजा करते हैं। इसका नाम ही है रुद्र यज्ञ। मिट्टी आदि बड़ी फर्स्ट क्लास होती है। तो ये हो गई मिट्टी पूजा। दीपमाला पर मिट्टी के खिलौने आदि बनाते हैं ना। ये है ही ..... गुड़ियों की पूजा। बुत आदि मिट्टी के बनाते हैं यादगार के लिए, फिर पुजारी बैठ पूजा करते हैं। भारत पूज्य था। सतयुग–त्रेता में पुजारी पना था नहीं। आधा कल्प है ज्ञान, आधा कल्प है भक्ति। गाया भी जाता है– आप ही पूज्य, आप ही पुजारी, फिर कहते सब भगवान हैं। समझते हैं भगवान ही पूज्य था, भगवान ही पुजारी बनते हैं। इसको उल्टी गंगा कहा जाता है। बाप को तो सब बुलाते हैं– हे भगवान, हे पतित–पावन, हे रहमदिल। पुकारना (मा)ने आवाहन करना। भक्तिमार्ग में आधा कल्प पुजारी लोग आवाहन करते हैं, स्वर्ग में तो तुम स्वयं मालिक होंगे। तुमको बहुत स्वीटेस्ट बनाए रहा हूँ। गॉड फादर कितना मीठा, कितना प्यारा शिव भोला भगवान है। शंकर का तो नाम नहीं डालेंगे। शिव निराकार, शंकर आकारी। दोनों को मिलाना तो मूर्खता हुई ना। बाप कहते हैं माया ने तुमको कितना मूर्ख, बेसमझ बनाया है। सूरत मनुष्य की है, सीरत बन्दर जैसी है। मनुष्य को बंदर से भी बदतर कहा जाता है। कर्तव्य बंदर जैसे हैं; इसलिए देवताओं के आगे जाए गाते हैं मैं निर्गुणहारी में कोई गुण नाहीं। कोई के भी मंदिर में जावेंगे, पूजा एक ही प्रकार की करेंगे। सबको मिलाए देते हैं– अच्युतम् केशवम् श्री राम नारायण...। अब राम कहाँ, नारायण कहाँ! अभी अपन को समझ पड़ी है, सबको इकट्ठा कर दिया है। व्यास कौन था, ये भी जानते नहीं। वास्तव में सच्चे–2 व्यास सुखदेव के तुम हो। बाप बैठ सहज राजयोग की नॉलेज सुनाते हैं और इस सुखदेव के हम बच्चे हैं सच्चे–2 व्यास। हम ब्राह्मण हैं, हमको प्रैक्टिकल में बैठ सहज राजयोग सिखलाते हैं, जिससे हम मानुष से देवता बनते हैं। देवताओं के आगे जाकर गाते हैं– हम पापी, नीच हैं, कड़ुवे हैं। वो तो बहुत मीठे हैं ना। इस (ल०ना०) ने ही पूरे 84 जन्म लिए हैं, तत् त्वम्। सूर्यवंशी डिनायस्टी तो चंद्रवंशी से बड़ी है ना। बड़ी ते बड़ी होती है ना। ये नॉलेज सिर्फ तुमको ही मिलती है ना। ल०ना० में वहाँ ये नॉलेज नहीं होगी। हम वहाँ किसको नॉलेज दे मनुष्य से देवता बनाए न सकते तो बाकी क्या काम के! यहाँ तो तुम कितने काम के हो। स्वीटेस्ट बाप के बच्चे हो, फिर सो स्वीटेस्ट श्री ल०ना० बनेंगे। तुम जानते हो, हम स्वीटेस्ट फादर से स्वीटेस्ट बनते हैं। शिवबाबा है श्री–2, मीठे ते मीठा। उनसे हम भी मीठा बनते हैं। हम अपन को श्री–2 नहीं कह सकते। ये समझने की बातें हैं। तुम जितना अशरीरी, देही–अभिमानी बनेंगे तो गोया मीठे बाप को याद करते हो मीठा बनने। देही–अभिमानी बन बाप और वर्से को याद करना है। ये एक मुख्य बात न भूलो। मुझे याद करेंगे तो मेरे जैसे मीठे बन जावेंगे। ऐसा स्वीट बनाने वाले बाप को कितना याद करना चाहिए। मिठास का तो जैसे एक पहाड़ है। कहते हैं ना– सिमर–2 सुख पाओ...। कोई स्मरणी नहीं स्मरनी है, माला नहीं फेरनी है, सिर्फ याद करना है। कोई को भी ये पता न है कि ये माला किसकी याद में बनी हुई है। सिर्फ राम–2 करते माला फेरते रहते। अभी तुम समझते हो राम शिवबाबा के हम बच्चे हैं; इसलिए सिमरण करते हैं। माला फेरना तो पुजारी पन का चिन्ह है। हम बाबा को बहुत याद करते हैं। याद से ही हम एवरहेल्दी, निरोगी बन जाते हैं। बाबा बार–2 कहते हैं, अपन को अशरीरी समझ मुझे याद करेंगे तो बेड़ा पार है। बाकी कोई 10–20 भुजा वाला वा सूँड वाला मनुष्य होता नहीं, न कोई होह करने से कोई ..... देवता निकल आवेगा। ये बातें अब सुनते हैं तो समझते हैं ये सब क्या है। ये सब हैं भक्तिमार्ग की सामग्री। सतयुग में ये कुछ भी होंगे नहीं। भक्ति आधा कल्प चलती है। ज्ञान कोई आधा कल्प नहीं चलता, ज्ञान की प्रालब्ध आधा कल्प चलती है। ज्ञान से 21 जन्म का वर्सा मिलता है तो जैसे वो भक्ति का वर्सा मिलता है। भक्ति पहले सतोप्रधान फिर सतो, रजो, तमो हो जाती है वैसे ये भी बाप से वर्सा मिलता है तो पहले सतोप्रधान फिर सतो, रजो, तमो में आते हैं। ज्ञान का वर्सा भी सतोप्रधान, सतो, रजो, तमो होता है, भक्ति का वर्सा भी सतोप्रधान, फिर सतो, रजो, तमो होता है। ये समझने की बातें हैं। पहले तो समझना है हम आत्मा मोस्ट बिलवेड बाप के बच्चे हैं। बाप इस जिस्म में आए हैं। जिस्म बिगर मुरली कैसे सुन सको? निराकारी दुनिया (ही) है साइलेंस वर्ल्ड, फिर है मूवी, ये टॉकी।

तीन लोक है ना! एक–2 बात तुम नई सुनती हो। दुनिया में कोई जान न सके। तुम जानते हो, हम आत्माएँ साइलेंस वर्ल्ड से आती हैं, वहाँ के रहवासी हैं; इसलिए इसका नाम ब्रह्माण्ड रखा हुआ है। अण्डे मिसल आत्माएँ रहती हैं; परन्तु ऐसे है थोड़े ही। अगर स्टार कहें तो स्टार की पूजा कैसे हो? फूल–दूध आदि उनपर कैसे ठहर सके? नाम तो शिव ठीक है। ऐसे नहीं कि वो बाप बड़ा, हम आत्मा छोटी हैं। परम माने परमधाम में रहने वाली आत्मा और मोस्ट बिलवेड है। तुम जानते हो, अब हमको बाबा की श्रीमत पर चलना है। बहुत मीठे ते मीठा बाप आकर हमको मोस्ट स्वीट बनाते हैं। आत्मा स्वीट बनेगी तो शरीर भी स्वीट मिलेगा। बाप कहते हैं, सिर्फ बीज और झाड़ को याद करो। बीज बाप ऊपर में है। वो है वृक्षपति। ये है फाउंडेशन, फिर इनसे और टार–2 निकलते हैं। दुनिया में कोई की बुद्धि में ये नहीं है। बाप कहते हैं– लाडले बच्चे, निराकार बाप इस शरीर द्वारा बोलते हैं, तुम इन कानों द्वारा सुनते हो। आत्मा ही धारणा करता है। ज्ञान सूर्य प्रगटा, अज्ञान अंधेर विनाश। अंधेरी रात होती है ना। मनुष्य समझते हैं, इससे भी अजन अंधेरा होगा। ये है ही घोर अंधियारा। मनुष्य ये भी नहीं जानते; इसलिए बाप कहते हैं कितने (इडि)यट्स बन पड़े हैं। तुम अब सब कुछ जान गए हो। आगे कुछ नहीं जानते थे, अभी तुम रचयिता और रचना के आदि–मध्य–अंत को जान गए हो, जिसके लिए सन्यासी कहते थे बे अन्त हैं, ईश्वर तुम्हारी गत–मत न्यारी है। तुम तो समझाते हो ईश्वर ... ही आए गति–सद्गति करते हैं श्रीमत से। तुम जानते हो हम सो नर से ना०, नारी से लक्ष्मी बनेंगे। कितना भारी नशा है! एम–ऑब्जेक्ट तो एक होती है ना। बैरिस्टर बनेंगे; परन्तु नम्बरवार तो बनेंगे ना। इसलिए फॉलो मदर–फादर। जानते हो, मदर–फादर पुरुषार्थ कर नम्बरवन और पलेस(प्लस) में जाते हैं, तो हम भी पुरुषार्थ करें, हम भी इतना स्वीटेस्ट बनें। बच्चे माँ–बाप के तख्त पर जीत पहनेंगे ना। वो बड़े हो जावेंगे तो वो (मात–पिता) नीचे उतरेंगे, तब बाप कहते हैं– हम मात–पिता पर भी जीत पानी है। बहुत प्यारा, बहुत मीठा बनना है। तुम्हारे मुख से सदैव रत्न निकलने हैं। रूप–बसंत तुम हो। उन्होंने तो एक अखानी बैठ बनाई है। हैं ये ज्ञान रत्न। जवाहरात को तो बाबा अच्छी रीति जानते हैं। सबसे वनज(वाणिज्य) जवाहरात का ऊँच गिना जाता है। ये भी ज्ञान रत्न हैं। एक–2 रत्न की धारणा होती है। इससे तुम अनगिनत, पदम पति बनते हो। तुम्हारे महलों में कितनी सोने की ईंटें, हीरे जवाहर लगाते हैं। बड़े सुखी रहेंगे, एवर हेल्दी, एवर वेल्दी बनेंगे। ये जैसे बाबा वर देते हैं। जितना मीठा बनेंगे उतना बाप खुश होगा। स्कूल में टीचर स्टूडेंट को जानते हैं ना। ये तो बेहद का बाप, टीचर, सद्गुरु है। अभी तुम बच्चे सामने बैठे हो तो मुरली भी ऐसे निकलती है; परन्तु ज्ञानी (तू) आत्मा बच्चों को फिर बाबा यहाँ रहने न देते। कहते हैं, जाओ, जाकर मानुष से देवता बनाओ। जो कड़ुवे ते कड़ुवे महाप्लेगी जीवड़े बहुत रोगी हो गए हैं उनको निरोगी बनाओ। अभी तो एवरेज आयु 35 वर्ष होगी। योगी की आयु बहुत बड़ी होती है। कृष्ण को महात्मा, योगेश्वर कहते हैं। उनका जब राज्य था तो एवरेज आयु 125–150 वर्ष थी। अब रोगी बन गए हैं। हिसाब तो है ना; परन्तु मनुष्य जानते नहीं। बुद्धि रूपी बर्तन जो सोने का था, उसमें विख ज़हर भरने से ये हालत हो गई है। अब बाबा ज्ञान अमृत डाल सोने की बनाते हैं। तो अब बाप को फॉलो करना है। बहुत मीठा बनना है मंसा, वाचा, कर्मणा। ल०ना० की महिमा है ना– सर्वगुण सम्पन्न...। उन्हों को ऐसा बनाने वाले की महिमा अलग है। वो मनुष्य सृष्टि का बीजरूप मोस्ट बिलवेड है, ज्ञान का सागर, सुख का सागर है। प्रेसिडेंट, प्राइम मिनिस्टर की महिमा अलग होगी कि सब एक ही एक है। भगवान ही भगवान है, सर्वव्यापी भगवान है। इसको कहा जाता अंधेरी नगरी...। तुम भगवान हो, क्या तुम सृष्टि के रचयिता हो? कैसे रचते हो? ऐसे बहुत मस्त होते हैं। बस, जिधर देखता हूँ भगवान ही भगवान है। वाह–वाह! एक ने माना, बस फॉलोअर्स बनते गए। उनका ये पार्ट ड्रामा में है। आत्मा आकर सिखलाती है।

सब कोई न कोई से सीखे हुए हैं। तो बाबा कहते हैं बिलवेड मोस्ट बनना है। जितना बनेंगे उतना बाप का नाम बाला करेंगे। भगवान पढ़ाकर मोस्ट बिलवेड बनाते हैं। मोस्ट बिलवेड बनना है। मुख से ज्ञान के रत्न ही निकलते रहे। मोस्ट स्वीट बनना है। कडुवाइस निकलनी न चाहिए। कराची में कोई थोड़ा क्रोध से बोलता था तो कहते थे इनमें भूत है, इनको दूर बिठाए दो। इतनी खबरदारी रहती थी। कोई क्रोध करे या तो किनारा कर लेना चाहिए या तो मुस्कराते रहना चाहिए। हम भूत को रिस्पॉड नहीं देते, चुप रहते हैं। बहुत–2 स्वीट बनना है। स्वीटेस्ट बाबा के बच्चे बने हो। जानते हो, हम बाबा के पास जाए रहे हैं। बाबा बिगर कोई स्वीट बनाए न सके। वो न आए तो देवी–देवता स्वीट कैसे बने? ड्रामा में सबका अपना–2 पार्ट है। जो बिलवेड मोस्ट बनेंगे वो ही नम्बरवन में जावेंगे। बाप को याद करना है सिमर–2.... कलह कलेश मिटे सब तन के। बाप कहते हैं, मीठे बच्चे, तुम 21 जन्म कब रोग न देखेंगे, कोई व्याधि नहीं लगेगी। त्रेता में भी बहुत अच्छे रहेंगे। द्वापर से थोड़ा रोग लगना (शुरू) होगा। बाप कहते हैं– बच्चे, बहुत मीठा बनो। भारत को स्वीट बनाना है। बाबा का बर्थ प्लेस कहते ही है, भारत में ही आते हैं। इसको मगध देश कहते हैं। सिंध में मागरमच्छ होते हैं तो नाम ही मगध देश पड़ा है। सरस्वती भी वहाँ से निकली है। शिवबाबा भी वहाँ आते हैं। ब्रह्मा भी वहाँ से निकला है। तुम जानते हो बाबा कहाँ आए। बाबा की प्रवेशता हुई। ध्यान में चले जाते थे। समझते थे ये जादूगर है। अच्छा, गीत सुनाओ। जैसे शास्त्र की एक लाइन उठाए फिर कथा बैठ करते हैं ना। हमारा फिर शास्त्र देखो कैसा वण्डरफुल है! ... बेहद की महफिल में आए हैं; परन्तु कोटों में कोऊ ही निकलते हैं। जो देवता धर्म के हैं, उन्हों का ही सैपलिंग लगता है। ब्राह्मण, देवता, क्षत्रिय, तीनों धर्म की स्थापना करते हैं, फिर द्वापर से और मैसेंजर्स आदि आते हैं अपना–2 धर्म स्थापन करने। (R) बच्चियाँ पुकारती हैं तो कब देहली, कब बम्बई, कब कानपुर चले जाते हैं रथ पर सवार हो। बाबा कहते हैं, ये नंदीगण है। मंदिरों में बैल दिखाते हैं। बैल पर थोड़े ही सवार होंगे। (मो)हम्मद का पटका घोड़े पर दिखाते हैं। अब वो कोई घोड़े पर थोड़े ही आया होगा। उन्होंने हसीन का घोड़ा बनाए दिया है और यहाँ फिर हुसैन का बैल बनाया है। तुम सब काले हो ना। एक मुसाफिर आकर तुमको कितना हसीन, गोरा बनाते हैं। साजन कहते हैं, तुम सजनियों की ज्योत जगाए हम सबको ले जावेंगे, सिर्फ तुम मुझे याद करो। अच्छा, स्वीटेस्ट बापदादा का मोस्ट स्वीटेस्ट चिल्ड्रेन्स प्रति नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार यादप्यार और गुडमॉर्निंग। नम्बरवार तो हैं ना। सब एक जैसे नहीं पढ़ते। स्कूल में बहुत नापास हो जाते। रिजल्ट कम निकलती है तो टीचर का नाम बदनाम हो जाता। यहाँ उनकी रिजल्ट तो कब कम होगी नहीं। वैकुण्ठ तो बन ही जाना है। अच्छा!